सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जनवरी-फरवरी, 2012

सच्चा धन

मरकुस (12 :42-44) 'इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर तांबे के दो छोटे छोटे सि क्के डाले जिसका मूल्य लगभग एक पैसे के बराबर होता है। तब यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि कोष में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है; क्योंकि अन्य सब ने अपनी बहुतायत में से डाला है, परन्तु इसने अपनी दरिद्रता में से जो कुछ उसका था अर्थात अपनी सारी जीविका डाल दी है।'

यीशु ने देखा कि धनी लोग कैसे अपनी बढ़ाई करते हुए भेंट चढ़ा रहे थे। उन्होंने आभारी मन से नहीं दिया, यह नहीं सोचा कि परमेश्वर ने उन्हें इस योग्य किया कि इस महान उद्देश्य में सहभागी हो सकें। अब उस विधवा को देखो, गणित के हिसाब से उसने शत प्रतिशत दिया और वह उस धनी की भेंट से बहुत बढ़कर था। परमेश्वर देने वाला हाथ नहीं बल्कि उसके पीछे देने वाले मन को जाँचता

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

STAR UTSAV

चैनल पर

*हर **शनिवार सुबह 7:30** से **8:00** बजे*

सच्ची सामर्थ्य

1 इतिहास (29:11, 12) 'हे यहोवा, महिमा, सामर्थ्य, गौरव, विजय एवं ऐश्वर्य तेरे ही हैं, क्योंकि आकाश और पृथ्वी की समस्त वस्तुएं तेरी ही हैं, हे यहोवा, राज्य तेरा है और तू ही स भी के ऊपर प्र धान एवं महान ठहरा है। धन एवं प्रतिष्ठा दोनो तुझ ही से प्राप्त होते हैं और तू सभों पर राज्य करता है, और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और प्रत्येक को महान करना एवं सामर्थी बनाना तेरे ही हाथ में है।'

दाऊद कहता है महिमा, महानता और सामर्थ परमेश्वर के गुण हैं। सामर्थ्य परमेश्वर के हाथ से मिलता है। चीन का पुराना नेता 'माओ' कहता है, 'शक्ति बन्दूक की नाली से मिलती है। ' इसलिए जब नौजवानों ने आज़ादी के लिए प्रदर्शन किया तो वे क्या निकाल कर लाए ? वे बन्दूकें और तोपें ले कर आए। ये चीन के बूढ़े व्यक्ति आज भी संसार के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश का बन्दूक के दम पर दमन कर रहे हैं। जबकि पूर्वी यूरोप में साम्यवाद विफल हो गया है। यह बड़ी अश्चर्य की बात है कि हमारे देशों में, जहाँ गरीबी और उत्पीड़न पाया जाता है, साम्यवाद ने जड़ पकड़ी हुई है। तो जहाँ भी शोषण, घूसखोरी ऐवं धोखाधड़ी है, साम्यवाद कहता है, 'मैं चैंपियन हूँ।' – नहीं – शक्ति परमेश्वर के हाथ से मिलती है।

यह सबसे पहली बात हैं जो तुम्हें जाननी चाहिए। लोग शक्ति चाहते हैं। तुम संसार के कुछ भागों में लोगों को देखते हो, जो सेनाओं के, सरकार के विरोध में खड़े हैं क्योंकि वे शक्ति चाहते हैं।

तुम उन लोगों को देखते हो जो चुनाव के द्वारा सरकारी पदों पर पहुँचते हैं, वे शक्ति का दुरुपयोग करते हैं, सरकारी धन को बरबाद करते हैं। लोग केवल ताकत चाहते हैं। वे सोचते हैं, पैसे से ताकत मिलती है। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से सोचते हैं कि शिक्षा से ताकत मिलती है। एक तरह से यह बात सही है, जब तुम शिक्षा पाते हो, तो तुम्हारी सोच समझ खुल जाती है। तुम भविष्य के लिए योजना बना पाते हो। लेकिन मुझे यह नज़र नहीं आता कि शिक्षा इस संसार की समस्याओं को सुलझा रही है।

ऐसी शक्ति है जो परमेश्वर के हाथ से प्राप्त होती है और दाऊद इस शक्ति के बारे में बात कर सकता है क्योंकि दाऊद ने अपने सभी दुश्मनों को जीता और उसका एक दुश्मन था, उसका अपना शारीरिक पापी स्वभाव। वह परमेश्वर के पास गया और बोला, 'मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है, और जो तेरी दृ ष्टि में बुरा है वही किया है, इसलिए तू अपनी बात में खरा, और न्याय करने में सच्चा

ठहरता है। ' भजनसंहिता (51:4) उसने अपने आप को अपंग देखा। 'तेरा न्याय दुष्टता और व्यभिचार के विरुद्ध स्पष्ट है। मेरा पाप मुझे कभी नहीं भूलता। मैं अपने बिस्तरे पर आंसूओं में तैरता हूँ। ' उसने कहा। जब पाप हमारे अन्दर आता है तो परमेश्वर की दी ताकत खत्म हो जाती है।

और बाइबल कहता है, 'मैं परमेश्वर के आत्मा द्वारा सामर्थ्य से भरा हूँ और न्याय से, और शक्ति से, कि याकूब के पाप उसे याद दिलाऊँ और इस्राएल को उसके पाप। ' मीकाह (3:8) आज कल लोग चिकनी चुपड़ी बाते करते हैं। कभी-कभी प्रचारक भी ऐसा करते हैं। वे जोकर और अभिनेता बन गए हैं। वे उनको केवल मुस्कराना और खुश करना चाहते हैं – केवल इतना ही। यह खुशी क्या है ? क्या वह सच्ची खुशी है ? सच्ची खुशी मन की पवित्रता के साथ आती है। सच्ची खुशी तब मिलती है जब तुम परमेश्वर के विरुद्ध और अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप नहीं कर रहे हो। देखो आजकल लोग कैसे संघर्ष में हैं – पारिवारिक संघर्ष, अधिकारियों के बीच संघर्ष और संबंधों में संघर्ष। क्या तुम्हारे मन मे विरोधी झुकाव है – कोई घृणा, कुछ कड़ुवाहट, कुछ कठोर शब्द, कोई बदले की भावना, कोई घाव, अपने पड़ोसी के विरोध में कोई बात? जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ तुम कैसे शक्ति पा सकते हो। तुम प्रेम और पवित्रता के बिना शक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

यहाँ पर नबी कहता है। 'मैं शक्ति से भरा हूँ। किसलिए ? अपने लोगों को उनके पाप दिखाने के लिए।' तुम जानते हो कि ऐसे शल्यचिकित्सक के पास जाने का कोई लाभ नहीं यदि वह ऐसा कहे, 'हाँ, हो सकता है, तुम्हें कैंसर हो। शायद किसी न किसी रूप में है और हो सकता है कि तुम दो सप्ताह में मर जाओ।' ऐसे डाक्टर को कौन चाहता है? कौन ऐसी बिमारी की जानकारी चाहता है। तुम ऐसे व्यक्ति को चाहोगे जो कहे, 'कैंसर यहाँ है और मैंने इसे और इसके आसपास की जगह को भी साफ कर दिया है।'

तुम कैसे प्रचारक को चाहते हो? मज़ाकिया, लोगों का मनोरंजन करने वाला, मसखरा, अभिनेता ! संसार भर में मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो मसीह की कलिसिया का नाश कर रहे हैं। सत्य को प्रेम के साथ बोलने के लिए वे शक्ति से नहीं भरे हैं। वे सच नहीं बोल पाते। ऐसा है तो तुम्हें प्रचार मंच पर नहीं जाना चाहिए। यदि तुम सच को सच और झूठ को झूठ नहीं कह सकते, धोखेबाजी को धोखेबाजी, कर चोरी को कर चोरी नहीं कह सकते तो तुम उस दफ्तर में, अस्पताल में, फैक्टरी में काम नहीं कर सकते। क्या तुम चोरी को उसके सच्चे नाम से नहीं पुकार सकते?

हम, लोगों को सरकार से चोरी करते हुए देखते हैं – अपने दफ्तरों से कागज़ की, कापी-पेन की चोरी। उनमें सामर्थ्य नहीं है। जिस भी चीज़ को देखते उसे चुराना चाहते हैं। 'मैं अपने लोगों को उनके पाप दिखाने के लिए सामर्थ्य से भरा हूँ।'

जनजातिवाद एक कालदोष है जो हमें दुबारा उन काले युगों में ले जाकर जीने पर मज़बूर करता है। यदि तुम आदिवासी हो, यदि तुम अपने को उच्च जाति का सोचते हो या तुम अपने छोटे से समूह या छोटे से गुट या अपनी जाति के विषय में सोचते हो तो तुम अपरिपक्व, पढ़े लिखे बौनें हो। कितने लाखों लोग हैं जो तीर्थयात्रा से अपने पापों को धोने की कोशिश करते हैं, यहाँ नहाना वहाँ नहाना! लेकिन तुम उलटे और ज्यादा गंदे होकर लौटते हो।

तुम्हारे अन्दर सच बोलने की ताकत नहीं है। तुम्हारे अन्दर यह बताने की ताकत नहीं है कि कैंसर कहाँ है । तुम अपने माता-पिता को उनकी कब्र में और नरक में भेजना चाहते हो। तुम सारे देशों को नरक की आग में झोंकना चाहते हो क्योंकि तुम प्रभु यीशु मसीह की घोषणा करने से डरते हो, केवल एक नश्वर है जिसने कहा, 'मैं ही सत्य हूँ।' कोई और कभी ऐसा नहीं कह सकता जैसे न्याय से और सच्चाई से यीशु ने कहा, 'मैं ही सत्य हूँ।'

तुम यीशु की घोषणा कर ने से डरते हो। तब तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं होगी। बाइबल हमे यह भी

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

बताता है, 'न बल से, न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा ... ज़कर्याह (4:6)' तो यह कैसी शक्ति है जो आदमी की सामर्थ्य से बढ़कर है? वह शक्ति - पवित्र आत्मा है। वह आत्मा जिसने यीशु मसीह को मरों हुओं में से दुबारा जीवित कर दिया – पवित्र आत्मा। किसे पवित्र आत्मा दिया गया था? पतरस ने कहा, ' उन्हें जो उसकी (परमेश्वर) आज्ञा का पालन करते हैं। ' आजकल ऐसे भी लोग हैं, जो झूठे हैं, जो अपनी पत्नी को पीटते हैं और कहते हैं, वे 'पवित्र आत्मा' से भरे हैं। बेवकूफी। तुम किसी दूसरी आत्मा से भरे हो, पवित्र आत्मा से नहीं। लोग, जो अपनी पत्नियों को तालाक देते हैं, कहते हैं वे पवित्र आत्मा से भरे हैं। नहीं। तुम झूठ की आत्मा से भरे हो, वाचा तोड़ने और शैतान से।

दुबारा बाइबल कहता है, नहूम (1:3) 'यहोवा विलम्ब से क्रोध करने वाला और महाशक्तिशाली है, और दोषी को यहोवा दण्ड बिना कदापि न छोड़ेगा। उसका मार्ग बवण्डर और आँधी है और बादल उसके पैरों तले की धूलि है। ' वह शक्ति में महान है लेकिन वह दोषी को नहीं छोड़ेगा। तो परमेश्वर की सामर्थ्य तुम्हें न्याय में लेकर आएगी। एक दिन तुम इस धरती के न्यायधीश को देखोगे। उस दिन तुम्हारे मंत्रोच्चारण, तुम्हारे धूपदान और तुम्हारा सारा धार्मिक कचरा तुम्हें नहीं बचा पाएगा। परमेश्वर दुष्ट को नहीं छोड़ेगा। वह शक्ति में सामर्थी है।

पतरस से यह प्रश्न पूछा गया, 'किस अधिकार द्वारा तुमने इस लंगड़े व्यक्ति को चलने लायक बनाया? पतरस ने यह जवाब दिया, 'तो तुम सब को और समस्त इस्राएल के लोगों को मालूम हो जाए कि यीशु मसीह नासरी के नाम से – जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया और जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिला उठाया – इसी नाम से यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला-चंगा खड़ा है। - प्रेरितों के काम (4 :10)' तो जब तुम खड़े होते हो तो कौन महिमा पाता है? सारे के सारे शरीर को, प्राण और आत्मा को, शुद्धि, आज़ादी, छुटकारा, - पवित्र आत्मा द्वारा मिला। पतरस कहता है, 'यह लंगड़ा व्यक्ति, उस सामर्थ्य से जो यीशु को मरें हुओं में से उठा लाई और उसी के नाम में , जो मरें हुओं में से जीवित हो उठा। ' तुम क्या सोचते हो, मैंने कैसे छुटकारा पाया? तुम क्या सोचते हो मैंने यह अद्भुत शांतिं कैसे पाई है ? तुम क्या सोचते हो , जब तक के वे समाज के लिए आशिष न बन जाएँ , मैं नशा खोरों और नशे का धन्धा करने और लालचियों कि कैसे बदलता हूँ,? यीशु मसीह द्वारा जो सारे आशीर्वाद, पवित्रता और सामर्थ्य का स्त्रोत है। परमेश्वर तुम्हे आशीष दे।

- जोशुआ दानियल।

सच्चा धन... पृष्ठ 1 से

है। उस विधवा ने परमेश्वर को घूस देने के उद्देश्य से भेट नहीं दी।

परमेश्वर को विधवाओं का खास ध्यान रहता है। वह विधवा के घर का तेल था जो परमेश्वर ने कई गुणा किया। वह विधवा ही थी जो उस टूटे हुए मन की थी, जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है। याकूब (1:27) 'हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं की व्यथा में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें। ' यह विधवा आभार से भरी थी।

परमेश्वर में कोई घृणा, द्वेश और अविश्वास नहीं है। धनी लोगों का बड़ा अलग नज़रिया है। उनके पैसे ने उन्हें आत्म संतुष्टि में डूबो दिया है और इस कारण उनके गुण दब गए हैं।

परमेश्वर धनी व्यक्ति को उसके धन से कहीं मूल्यवान मानता है। परमेश्वर तुम्हारे व्यक्तित्व, जीवन या प्रचार पर निर्भर नहीं करता, लेकिन वह तुम्हारे विश्वास पर ध्यान देता है। मसीही परिवारों में कितने नौजवान हैं जो कम उम्र में ही मर जाते हैं। उन्होंने परमेश्वर की परवाह नहीं की और विश्वास में नहीं बढ़े और अब वे बिमारी का सामना नहीं कर पाते। उनकी मृत्यु कितनी बड़ी हानि है। धनी व्यक्ति के गुण बढ नहीं पाए क्योंकि वे उसके धन के नीचे दबे रह गए और इस संसार के लाभ के लिए जो योग्यताएँ परमेश्वर ने उसे दी हैं वे भी छिपी रहती हैं।

किस तरह हडसन टेलर और जोन वैसली ने अपनी आत्मिक क्षमता को बढ़ाया और वह संसार पर आशिष सिद्ध हुए। कितने सारे लोग जो अपने जीवनकाल के बीचोंबीच धनी बन गए, वे परमेश्वर के राज्य के लिए बेकार साबित हुए। कुछ ने विवाह में धन हाँसिल किया और कुछ ने अपने लक्ष्य के अनुसार पाया। अपनी सहायता के लिए उन्होंने उस धन को पाया। यह सत्य है कि वे परमेश्वर के काम के लिए धन देते हैं। लेकिन वे स्वयं परमेश्वर को समर्पित नहीं हैं। इस विधवा ने अपना सब कुछ दे दिया।

किसने परमेश्वर के विचारों को जाना है? क्या तुम जानते हो तुम्हारे लिए उसने कितना त्याग किया? यदि तुम जानते, तो तुम आपना सब कुछ दे दोगे। तुम अपने को खाली कर दोगे। 'मटके को खाली कर दो और कुप्पी में से तेल निकाल लाओ ' परमेश्वर के जन

सत्य की परख

"परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट के समय तत्पर सहायक। इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पर्वत समुद्र-तल में जा पड़ें।" भजन संहिता (46:1-2)

ने कहा। तुम देखोगे वह दुबारा भरेगा। कैसे मसीह उस विधवा के बेटे के पास पहुँचा। लेकिन परमेश्वर को उसका ध्यान था। उसने नबी को उसके पास भेजा। वह आया कि मृत्यु को जीवन में, दुख को आनंद में बदले। आओ निराशा तुम्हें हताश न करे। जब तुम्हारे सब साधनों का अन्त होगा, वह परमेश्वर का समय है – परमेश्वर के लिए मौका।

जब तक तुम्हारे पास कोई हल है, किसी चीज़ पर निर्भरता है, तुम उसी दिशा में देखते रहोगे। लेकिन जब निर्भर होने कि लिए कुछ भी नहीं है, तब तुम उस विधवा की असहाय स्थिति में पहुँचोगे, उस विधवा के टूटे फटे मन वाली स्थिति में आओगे और तब वह परमेश्वर के लिए मौका होगा। उस विधवा का भविष्य बड़ा अनिश्चित था। लेकिन परमेश्वर ने उसका भविष्य संवारा। जब तुम्हारी सहायता के लिए कोई नहीं होगा तो परमेश्वर तुम्हारी सहायता करेंगे।

एक बार साधु सुन्दर सिंह रेगिस्तान में भटक गया था । उस असहाय हालत में उन्होंने परमेश्वर को पुकारा। उन्हें अपने चारों ओर रेत के अलावा कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। तब अचानक एक व्यक्ति आया और बड़ी मिठास से बातचीत में लग गया, जिससे उसकी थकान जाती रही। जल्द ही वे एक गाँव तक पहुँचे और तुरंत वह व्यक्ति ओझल हो गया। सुन्दर जानता था कि वो एक स्वर्गदूत था।

परमेश्वर के दूत सदा उन पर ध्यान लगाए रहते हैं जो हताश हैं। यह बिलकुल भी परमेश्वर का उद्देश्य नहीं है कि कोई निराशा में मरे। परमेश्वर ने तुम्हारे लिए महान योजना बना रखी है। जब तुम एक निराशा की हालत में पहुँचोगे तो परमेश्वर की महिमा देखोगे। अपने मन को नम्र रखो तब तुम परमेश्वर की आशिष देखोगे और उसके साधन तुम्हारे लिए कई गुणा हो जाएँगे।

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियल।

कफ़ नामक गुलाम

कफ़ नामक एक गुलाम था। हमेशा प्रसन्न रहने वाला एक ईसाई और एक विश्वासनीय सेवक था। मगर उसके मालिक को पैसों की जरूरत थी और उसे बेचना चाहा। कफ़ को खरीदने एक विधर्मी आया। दाम तय हुआ। उस ईसाई दास को, उस विधर्मी के हाथों बेचा गया। उस से विदा लेते समय मालिक ने कहा, "आप कफ़ को एक अच्छा सेवक पाओगे। आप उस पर विश्वास कर सकते हो। हर विषय में वह आप के लिए मनभाव ना होगा, सिवाय एक के।"

"और वह क्या विषय है?" विधर्मी ने पूछा।

"वह प्रार्थना करता है। उसकी यह आदत आप तोड़ नहीं पाओगे। मगर य ही उसमें एक मात्र दोष है।"

"जल्द ही मैं उसकी इस आदत को जड़ से उखाड़कर उससे निकालूँगा।" विधर्मी ने जवाब दिया।

"मुझे डर है यह संभव नही", पुराने मालिक ने कहा, "और मेरी यह सलाह है कि आप ऐसा करने की कोशिश भी मत करना। "; "वह मरने के लिए भी तैयार हो जाएगा, मगर वह प्रार्थना करना नहीं छोडेगा।"

कफ़ , जैसे कि वह पुरा ने मालिक के साथ था वै से ही इस न ए मालिक के प्रति भी विश्वासनीय साबित हुआ। जल्दी ही मालिक को यह खबर मिली की कफ़ प्रार्थना कर रहा है। अगली सुबह उसे बुलाकर कहा, "कफ़, आइन्दा तुम दुबारा प्रार्थना नही क रना; यहाँ कोई प्रार्थना नही होगी ; यह अनाप-शनाप आगे मुझे सुनना ना पड़े।"

कफ़ ने उत्तर दिया, "ओ मस्सा, मुझे यीशु से प्रार्थना करना अच्छा लगता है। जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तब मैं आप से और साहिबा से और अधिक प्यार करने लगता हूँ। आपके लिए और अधिक मेहनत कर पाता हूँ। " मगर उसके लिए प्रार्थना करना सख्त मना कर दिया गया। इस आज्ञा को तोडने पर खोडे पड़ने की कड़ी सजा की धमकी भी दी गयी। उस दिन शाम, सब काम खतम करने के बाद, प्राचीन दानिय्येल की तरह, वह परमेश्वर से बातें करने प्रार्थना करने लगा।

अग ली सुबह मालिक के सामने पेश होने के लिए उ से बुलाया गया, जिसने पूछा कि उसकी आज्ञा क्यों तो ड़ी ग ई है। "ओ मस्सा, मे रे लिए प्रार्थना करना बड़ा ज़रूरी है, उसके बिना मैं जी नही पाऊँगा!" कफ़ ने कहा। यह सुन कर मालिक गुस्से से भड़क उठा। खंभे से बांधकर कमीज उतारने की आज्ञा दी। पूरी ताकत लगाकर कोड़े मारने लगा जब कि उसकी जवान पत्नी ने रोते हुए उसे रोकने की विनती कर रही थी। वह मालिक इतना गुस्से में था कि उसकी पत्नी को भी धमकी देने लगा कि अगर वह नही हटेगी तो उसे भी सजा भुगतनी पड़ेगी।

तब उसने आज्ञा दी की उस दास के लहु लुहान पीठ को नमक के पानी से धोया जा ए; तब अप नी कमीज पहन कर दुबार काम में लग जाने की आज्ञा दी गयी। कफ़ कराहती आवाज़ में गीत गाते हुए चला गया। - "मेरी यातना के दिन जल्दी अंत हो जायेंगे, जब मुझे और कराहना और रोना ना पड़ेगा।"

कफ़, दिन भर बहुत मेहनत करके काम करता रहा, जब की वह कोड़े के घाव से वह बुहत पीड़ा में था। इस दौरान परमेश्वर उस मालिक के मन में काम रहे थे। उस गरीब व्यक्ति

के प्रति उसकी क्रूरता और उसकी दुष्टता को वह देख पाए। उस दास का दोष सिर्फ यही था कि वह खरा है। मालिक को अपनी गलती का एहसास हो रहा था। रात होने तक उसका मन बहुत विचलित हो उठा। वह सो भी नही पा रहा था। वह इत नी पीड़ा में था कि आधी रात के समय अपनी पत्नी को उठाकर उससे कहने लगा की वह मरने वाला है।

"क्या मैं डॉक्टर को बुलाऊ?" पत्नी ने पूछा।

"नहीं नहीं मुझे डॉक्टर की जरूरत नहीं। हमारे बागान में ऐसा कोई है जो मेरे लिए प्रार्थना कर पायेगा। मुझे डर है कि मैं नरक जाने वाला हूँ।"

"ऐसा कोई और है या नहीं मुझे पता नही," पत्नी ने कहा "सिवाय उस दास के जिसको आपने सुबह ही दण्ड दिया था।"

"क्या वह मेरे लिए प्रार्थना करेगा," संदेह व्यक्त करते मालिक ने पूछा।

"हाँ, मुझे लगता है।" उसकी पत्नी ने उत्तर दिया।

"उसे तुरन्त बुला भेजो।"

कफ़ को ढूँढते पाए जाने पर उसे प्रार्थना करते अपने घुटनों पर पाया गया। बुलाने पर कफ़ को लगा की दुबारा उसको सजा मिलेगी। अपने मालिक के पास जाने पर, मालिक ने कराहते हुए कहा, "ओ कफ़, क्या तुम मेरे लिए प्रार्थना करोगे?"

"हाँ मालिक, मैं आप के लिए रात भर प्रार्थना कर रहा था।"

घुटनों के बल गिर कर वह प्राचीन याकूब की तरह प्रार्थना में द्वंद करता रहा। सुबह होने से पहले अपने मालिक और मालकिन को मन फिराते पाया। मालिक और दास एक दूसरे के गले लगे। जाति भेद और पिछली क्रूरता, परमेश्वर के प्रेम से बह गये। और खुशी के आँसू बहे। कफ़ को तुरन्त आज़ाद कर दिया गया। उसने उस बागान में आगे एक भी दिन काम नही किया। मालिक, कफ़ को साथ लेकर सुसमाचार फैलाने निकल पड़ा। वे हर जगह घूमते , गिरे से गिरे आदमी को बचाने में मसीह के सामर्थ्य की गवाही देते गए। इस तरह परमेश्वर का प्रेम, एक व्यक्ति के जीवन को बदलता है।

"डेविड लिविंगस्टन, मेरा मानना है कि..."

10 नवंबर, सन् 1871, के दिन न्यूयोर्क हेराल्ड अखबार के सम्वाददाता हेन्री स्टानली ने डेविड लिविंगस्टन से अफ्रीकी झील तन्गनइका के तट पर मिलते हुए अभिवादन में यह कहा "डेविड लिविंगस्टन, मेरा मानना है कि..."

विश्वविख्यात मिशनरी लिविंगस्टन जिसने जांबेजी नदी, विक्टोरिया जल प्रपात और नील नदी के स्त्रोत, इन सब की खोज की थी। अब सालों से उनका कोई अतापता नहीं था, मान्यता थी कि वह अब जीवित नहीं हैं। संशयवादी स्टानली, उनको खोजने निकल पड़े। स्टानली उनकी कहानी भी लिखना चाह रहे थे।

उन्होंने डॉ. लिविंगस्टन की विशेषताओं का इस तरह बखान किया:

"ऐसा आदमी जो स्वर्गीय सहायता के सहारे जीता है और जिसके जीवन में स्वर्गीय प्रभाव का नियंत्रण साफ झलकता है।

उनके जीवन मे .... उत्साह, निसन्देह मसीह से आता है। तो ज़रूर मसीह का अस्तित्व है।"

डेविड लिविंगस्टन के पत्रों, किताबें और जर्नल ने दास-प्रथा के उन्मूलन के लिए, लोगों के अन्दर एक गहरी पुकार पैदा कर दी। अपने लेखों में डेविड लिविंगस्टन ने एक घटना का इस तरह उल्लेख किया: "हमने रास्ते पर पड़ी एक दासी को देखा या जो गोली मार कर या छुरा भोंखकर मार दी गयी थी। देखने वालों ने कहा कि वह दासी आगे चल नही पा रही थी। उसको मोल लेने में जो पैसा बरबाद होते देखकर गुस्से में मालिक ने उसे मार डाला।"

न्यूयोर्क हेरल्ड के संपादक को लिए एक पत्र में डेविड लिविंगस्टन लिखते है:

"अगर मेरे लिखे लेखों के कारण, उझीजैन में प्रचलित भयानक दास-प्रथा और पूर्वतटीय क्षेत्रों के गुलामों की खरीद-बेच बन्द हो गई तो इसे मैं नील नदी के स्त्रोतों की खोज से भी बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण बातमानूँगा।"

अफ्रीकी वासियों को लिविंगस्टन से इतना लगाव था की सन् 1873 में, भंगवीलू नामक झील के निटक, मलेरिया से पीडित लिविंगस्टन, अपने बिस्तर के बगल में अपने घुटनों पर ही मरा हुआ पाया गया, तब उनके अनुयाइयों ने, नमक से बांधे उनका शव को इग्लैंड वापस भेजने से पहले, उनके दिल को निकाल कर अफ्रीका में ही दफनाया। इग्लैंड के वेस्टमिनस्टर ऐबी में उनको दफनाया गया।

अपनी दैनिक पंजी में लिविंगस्टन ने लिखा:

"जो मेरे पास है और जो मेरे पास होगा, मेरे लिए उनका कोई महत्व नही। सिवाय उस चीज़ के जो मसीह के राज्य से जुड़ी हो। अगर किसी चीज़ के रखने से उनका राज्य आगे बढ़ता है तो वह चीज़ रखी जाऐगी, यदि किसी चीज़ के देने से उनका राज्य आगे बढ़ता है तो वह दे दी जाएगी। ऐसे देने या रखने से परमेश्वर की महिमा करना ही मेरा लक्ष्य है, जिन पर आज से लेकर अनन्तकाल तक मेरी आशा लगी है। "

सन् 1857 दक्षिण अफ्रिका में मिशनरी यात्राओं और अनुसंधान के दौरान डॉ. लिविंगस्टन ने अपनी प्रेरणा को इस तरह प्रतिबिम्बित किया: "अपने सारे अपराधों की माफी परमेश्वर की पुस्तक (बाईबल) में जिस तरह दी गई है, यह बात मुझ में, लहु से हमे मोल लेने वाले उस उद्धारकर्ता के प्रति गहरा प्यार पैदा करती है। मुझ पर उनके अनुग्रह के कारण, उनके प्रति आभारी होने का गहरा एहसास, तब से लेकर हमेशा, मेरे आचारण को प्रभावित करता आया है।"

- बिल फेड़रर अमारिकन मिनट